Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 3, No. 2, November – December 2025

आधुनिकता के दौर में नोक्टे जनजाति : परंपरा, परिवर्तन और संघर्ष।

डॉ. दानचा तोंगलुक
सहायक प्रोफेसर, वांगचा राजकुमार सरकारी महाविद्यालय, देवमाली, तिराप, अरुणाचल प्रदेश

सारांश

नोक्टे जनजाति भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में, अरुणाचल प्रदेश के राज्य की एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक जनजाति हैं। यह अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और सामाजिक संरचना के लिए जानी जाती हैं। परंपरागत रुप से नोक्टे जनजाति सामुहिक, प्रकृति आधारित और सांस्कृतिक रुप से समृद्ध रहा हैं। लेकिन बीते कुछ दर्शकों में आधुनिकता की लहर ने इस समुदाय के जीवन के लगभग हर पहलू को प्रभावित किया हैं।

इस शोध पत्र के माध्यम से मैं नोक्टे जनजाति में आधुनिकता के प्रवेश, उसके प्रभाव और उससें उत्पन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक चुनौतियों का विश्लेषण करने का प्रयत्न करुगी।

प्रमुख शब्द: नोक्टे जनजाति, अरुणाचल प्रदेश, आधुनिकता, चुनौतियाँ।

1. नोक्टे जनजाति की पारंपरिक जीवन शैली:

नोक्टे जनजाति की पारंपरिक जीवन शैली अत्यंत समृद्द, प्रकृति आधारित और सामुदायिक भावना से ओत-प्रोत हैं। यह जीवन शैली उनकी संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं, कृषि पद्दति, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में स्पष्ट रुप से दिखाई देती हैं। इनकी पारंपरिक शैली को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं।

(क) **कृषि आधारिक जीवन**: नोक्टे जनजाति की आजीविका का मूल आधार झूम खेती (Shifting cultivation) रही हैं। वे पहाड़ी ढलानों पर पेड़ काटकर और जलाकर खेती योग्य भूमि तैयार करते है जिसे "झुम" खेती कहा जाता हैं। जिसमें वे धान, मक्का, सब्जियाँ, अदरक, मिर्च आदि मुख्य फसले उपजाते हैं।

(ख) **आवास और बस्ती** : नोक्टे जनजाति के पारंपरिक बांस और लकड़ी से बनाए जाते है, जो जमीन से कुछ ऊँचाई पर होते हैं। गाँव के सभी परिवार एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंध रखते हैं। गाँव के सभी अच्छे और बुरे कायों में गाँव के प्रमुख या बुर्जुग परिषद उसका नेतृत्व करता हैं।

(ग) **सामाजिक संरचना** : नोक्टे जनजाति चूकि सामुहिकता पर आधारित समाज है, इसलिए हर व्यक्ति समुदाय की भलाई में अपना योगदान देता हैं। गाँव के किसी भी फैसलें में निर्णय सामुहिक रुप से लिए जाते है, जिसमें बुजुर्गों और मुखिया की महत्वपूर्ण भुमिका होती हैं। इसके साथ विवाह, मृत्यु, त्यौहार आदि सभी में सामाजिक भागीदारी होना जरूरी होती हैं।

(घ) **धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन**: परंपरागत रूप से नोक्टे जनजाति के लोग प्रकृति के जनक थे जिनमें वे पेड़, पहाड़, जंगल, जलस्त्रोतों आदि को अपना देवता मानते थे। पूर्वजों की आत्माओं की पूजा और बलि प्रथा भी प्रचलित थी। नोक्टे जनजाति के पास धर्म के साथ गहराई से जुड़ा लोक-विश्वास और अनुष्ठनिक गीत भी होते थे।

(ड़) **संस्कृति और लोक कला** : नोक्टे जनजाति के लोग पारंपरिक वेशभूषा के तौर पर पुरुष धोती, बांस की बनी टोपी जिसमें सुअर के दांत, गले में आभूषण आदि पहनते हैं, जबकि महिलाएँ हाथ से बुनी पोशाके जैसे गाले, टाँप, अनेक प्रकार के आभूषण आदि पहनते हैं। त्योंहारों के दैरान बड़े से ढोलक जिसको 'नोंग' कहते है, उसका उपयोग कर समुह नृत्य करते हैं।

(च) **शिल्प और कुटीर उद्दोग**: शिल्प और कुटीर उद्दोंग में देखा जाए तो नोक्टे जनजाति के लोग बांस, लकड़ी जैसे चीजों से टोकरियाँ, चटाइयाँ, बर्तन, अस्त्र-शस्त्र आदि बनाने में उनकी प्रमुख विशेषता हैं। उसके साथ महिलाएँ वस्त्र बुनने में दक्ष होती हैं।

(छ) **प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व:** नोक्टे जनजाति का जीवन पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर था। जल, जंगल और भूमि से संतुलन बनाकर वे जीवन-यापन करते थे। जिसके लिए वे पेड़ों की कटाई अगर करनी भी पड़े तो वे इसके लिए विशेष पूजा की जाती थी। जिससे पर्यावरण का सम्मान झलकता है।

(ज) **अनलिखित ज्ञान परंपरा**: नोक्टे जनजाति के अपना कोई लिखित रूप में इतिहास नहीं हैं। वे अपना ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से ही कर रहे हैं। चाहे वह कहानियाँ हो, गीत हो या जीवन अनुभवों के रूप में हो।

(2) आधुनिकता के प्रभाव (Impacts of modernity):

सकरात्मक प्रभाव-

(क) **शिक्षा और स्वास्थ सेवाओं में सुधार**: आधुनिकता के प्रभाव ने नोक्टे जनजाति के लोगों को शिक्षा और स्वस्थ संबंधी क्षेत्रों में बहुत सहायता प्रदान की। शिक्षा की क्षेत्र में देखे तो आधुनिकता के आ जाने से कई स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना हुई। जिसमें मिशनरी और सरकारी प्रयासों से नोक्टे क्षेत्र में प्राथमिकता, माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्लयों और कॉलेज की स्थापना हुई। इससे समुदायों की बच्चों को औपचारिक शिक्षा का अवसर मिला। शिक्षा की बढ़ोतरी के कारण फिर नोक्टे जनजाति के समुह में साक्षरता दर में वृद्धि हो गई। पहले जहाँ पारंपरिक ज्ञान पर ज्यादा जोर था वहीं अब लड़के और लड़कियाँ स्कूल साथ जाने और पढ़ने लगे। जिसके कारण नोक्टे जनजाति के साक्षता में वृद्धि निरंतर होने लगे। खासकर अब इस समुह के लड़कियाँ उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं। शिक्षा के माध्यम से नोक्टे जनजाति के युवाओं को सरकारी नौकरियाँ, शिक्षण, स्वास्थ्य सेवा, प्रशासन, सेना और निजी क्षेत्र में अवसर मिले हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी आधुनिकता ने नोक्टे जनजाति के समुह को बहुत प्रभावित किया। आधुनिकता के आ जाने से नोक्टे के अनेक क्षेत्रों में सरकार द्वारा PHCS, उप-स्वास्थ्य केन्द्रो और स्वास्थ्य शिविरों की स्थापना की गई। जिससे बुनियादी इलाज सुलभ हुआ। जैसे शिशु रोग, पोलियो, खसरा आदि के लिए नियमित टीकाकरण कार्यक्रमों, गर्भवती महिलाओं को सुरक्षित प्रसव के लिए अस्पताल में जाने की सुविधा और जागरूकता, सफाई, पोषण, परिवार नियोजन जीवन शैली में सुधार आदि। अतः शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में आधुनिकता ने नोक्टे जनजाति को कई सकरात्मक दिशाओं में आगे बढ़ाया। इससे न केवल उनकी जीवन शैली में सुधार आया है बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और अवसरों की समानता भी सुनिश्चित हुई हैं।

हालाँकि कुछ क्षेत्रों में आभी भी सुविधाओं की पहुँच सीमित है फिर भी यह स्पष्ट है कि आधुनिकता पहलुओं के माध्यम से नोक्टे समाज में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक सशक्त परिवर्तन आया हैं।

(ख) **रोजगार के नए अवसरः** शिक्षा और आधुनिकता के प्रसार से नोक्टे जनजाति के युवा अब रोजगार के क्षेत्र में भी अवसरें बढ़ रहे है जैसे शिक्षक, पुलिस, सेना, क्लर्क, डॉक्टर आदि। अनेक कई स्थानों पर तो स्वंय सहायता समुह (self help group-SHGs) के जरिए यहाँ की महिलाएँ (entrepreneurship) भी प्रोत्साहित हो रही हैं। इसके साथ आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक झूम खेती के साथ-साथ नकंदी फसलों की खेती, स्थानीय उत्पादों की ब्रिकी और मंडी से जुड़ाव भी बढ़ा है। इससे नोक्टे समुदाय के किसान अपनी उपज को बाजार में बेचकर अच्छा लाभ कमा पा रहे हैं। जैसे फल, सब्जी, बांस के उत्पाद, इलायची, शहद, पान आदि। इसके साथ अब नोक्टे जनजाति के युवा मोबाइल, इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार से ऑनलाइन कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगा। जैसे ऑनलाइन पढ़ाई और ट्यूटरिंग, यूटयूब चैनल बनाना, सोशल मीडिया मार्केटिंग, डिजिटल सेवाओं में सहयोग आदि। नोक्टे समुदाय चूकि तिराप के जीले के पहाड़ियों में बसे हुए है जहाँ प्रकृति की सुकुमारता और उपयोगिता कूठ-कूठ कर भरी हुए हैं। इसलिए यहाँ के लोग पूरी तरह प्रकृति की संसाषनों पर भी निर्भर हो सकते हैं। गाँव में बसे लोग इसका भसर फायदा उठाते हुए बांस, शहद, जड़ी-बूटियाँ और अन्य गैर, काष्ठ वन उत्पादों को संगठित रूप से एकतित कर बाजार में बेचते हैं। जैसे बांस से बनी टोकरियाँ, झाड़ू और हस्तशिल्प की स्थानीय व राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों में इनकी ब्रिकी होती हैं।

अतः आधुनिकता ने नोक्टे जनजाति को रोजगार के क्षेत्र में भी अनेक नए विकल्प और संभावनाएँ प्रदान की हैं। हांलांकि ग्रामीण इलाकों में कुछ चुनौतियाँ जैसे प्रशिक्षण की कमी, बाजार की दूरी, आर्थिक असमानता अब भी बनी हुई है, जिनका समाधान समुदाय और सरकार को मिलकर करना होगा।

(ग) **सामाजिक कुरीतियों में कमीः** नोक्टे जनजाति में अनेक सामाजिक अंधविश्वास, कुरीतियाँ आदि शामिल थे किन्तु आधुनिक शिक्षा, संचार, सरकार की जनतातीय विकास योजनाओं और धर्मातरण (विशेषकर ईसाई धर्म) जैसे कारणों से इन कुरीतियों मान्यताओं, विश्वासों में कमी आई हैं। नोक्टे जनजाति के लोगों में यह कुरीतियाँ हम प्रमुख रूप से इन बिंदुओं के आधार पर देख सकते हैं। सबसे पहले हम शिक्षा की प्रसार की बात करेगें जहाँ मिशनरी स्कूलों, सरकारी स्कूलों और छात्रों की छात्रवृत्तियों के कारण बच्चों और युवाओं में सामाजिक चेतना आई हैं। इसके साथ लोगों ने विज्ञान, स्वास्थ्य, मानव अधिकारों आदि को समझा जिससे अंधविश्वास और तांत्रिकता में विश्वास कम हुआ। नोक्टे समुदायों ने धर्मातरण करके भी अनेक नैतिक शिक्षाएँ प्राप्त की हैं विशेषकर ईसाई मिशनरियों के

माध्यम से इनमें अहिंसा, मानवता और सह-अस्तित्व की बात आई हैं। इससे सिर कलम (Head hunting) जैसी प्रथाओं का भी अंत हुआ और सामाजिक सहिष्णुता बढ़ी। महिला सशक्तिकरण और आधुनिकता ने नोक्टे जनजाति के सामुदायिक संगठनों में महिलाओं को नेतृत्व और भूमिका को भी महत्वपूर्ण घोषित किया हैं। जिसमें शादी, संपत्ति आदि की निर्णय में वह स्वंय ले सकती हैं।

अतः यही कहा जा सकता है कि आज सामाजिक कुरीतियाँ पहले की तुलना में बहुत कम हो गई है और यह बदलाव शिक्षा, धर्म, सरकारी योजनाओं और सामाजिक जागरूकता के संयुक्त प्रभाव से आया हैं। फिर भी कुछ पारंपरिक मान्यताएँ आज भी विद्दमान हैं, जिन्हें संवेदनशीलता और सम्मानपूर्वक सुधारना आवश्यक हैं।

नकरात्मक पक्ष -

आधुनिकता जब किसी परंपरागत समाज या जनजाति में प्रवेश करती है तो वह केवल सुविधाएँ ही नहीं लाती बल्कि संघर्ष भी पैदा करती हैं। यही संघर्ष को हम नोक्टे जनजाति के लोगों में भी देख सकते हैं जो कि आधुनिकता के आगमन के कारण उन्हें इन परिस्थितियों से संघर्ष करनी पड़ रही हैं।

(क) **सांस्कृतिक परंपराओं का क्षरणः** आधुनिकता के प्रभाव में युवा पीढ़ी आब अपनी ही संस्कृति को पिछड़ा और बेकार समझने लगी हैं। उन्हें यह लगता है कि आधुनिकता ही सब कुछ हैं। नोक्टे जनजाति के युवा वर्ग भी अपनी पारंपरिक नृत्य गीत, लोक कथाएँ, वेशभूषण और तीज-त्यौहार आदि से धीरे-धीरे विलुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज परिस्थिति ऐसी हो गई है कि न उन्हें अपनी खान-पान, वेशभूषा या पारंपरिक गीत पसंद हैं। उन्हे बस पाश्योत्य संस्कृति पसंद है। अगर लोक गीत या त्योहारों की बात करे तो त्योहारों के लोक गीत अब गीनी-चुनी लोगों को ही आते हैं वे भी खासकर बुजुर्ग वर्ग। युवा वर्ग इन गीतों को न सूनना पसंद करते है न ही उन्हें सीखना पसंद करते हैं। इसी कारण अब त्योहारों में भी वह आनंद या मनोरंजन दिखाई नहीं देती जो कि पहले हुआ करते थे। अर्थात नोक्टे जनजाति के युवाओं का झुकाव धीरे-धीरे आधुनिकता संस्कृति, जीवन शैली की ओर बढ़ रही हैं।

(ख) **सामाजिक संरचना में बदलावः** आधुनिकता का नकरात्मक प्रभाव हम नोक्टे जनजाति में उसके सामाजिक संरचना में बदलाव को देख सकते हैं। जहाँ नोक्टे समाज में सामुदायिकता और भाई-चारे की गहरी भावना हुआ करते थे किन्तु अब आधुनिकता के आ जाने से यह कमजोर पड़ गई हैं। इसके साथ-साथ नौकरी तथा शिक्षा की तलाश में अब गाँवों से बड़े पैमाने पर शहरी पलायन हो रहा हैं, जिससे ग्रामीण समाज और बिखरने लगा है। साथ ही परिवारों में जो प्रेम, संबंध हुआ करते थे अब वह सारे रिश्ते नाते खत्म हो गए।

(ग) **सामाजिक एकता में बदलावः** इसके साथ हम देखते है कि नोक्टे जनजाति में पहले परंपरागत रूप से सामुदायिक जीवन और भाई चारा का संबंध बहुत मजबूत हुआ करता था। इसलिए वे सामूहिक श्रम छुट गया (जैसे खेतों में एक दूसरे की मदद) और सामूहिक त्योहार में वे बढ़ चढ़ कर भाग लेते थे। किन्तु अब वह परिदृश्य देखने को नहीं मिलती क्योंकि आधुनिक जीवन शैली में इस सामाजिक सहयोग को कमजोर कर दिया है और व्यक्तिवाद का बढ़ना आरंभ हो गया हैं।

(घ) **नेतृत्व और निर्णय लेने की प्रक्रिया में बदलावः** नोक्टे जनजाति समाज में यह देखा गया कि पहले गाँव के किसी भी समस्या या परिस्थितियों को सुधारने या सुलझाने का कार्य गाँव के बुजुर्गों और मुखियाँ द्वारा यानि उस गाँव के राजा का निर्णय सर्वोपरि माना जाता था किन्तु अब आधुनिकता के प्रभाव से यह पंचायत, जिला परिषद और राजनीतिक प्रतिनिधियों की भूमिका बढ़ गई हैं। जिससे पारंपरिक नेतृत्व की शक्ति घट गई और आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था का प्रभाव और बढ़ गया अर्थात सामाजिक अनुशासन और सामुदायिक मूल्य कमजोर हो गए हैं।

(ङ) **धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में बदलावः** नोक्टे जनजाति में पहले अपनी परंपरागत अनुष्ठान या पूजा-पाठ होते थे जिससें वे प्रकृति के अनेक रुपों का पूजन करते थे किन्तु धीरे-धीरे आधुनिक शिक्षा और बाहरी संपर्क के कारण उनमें भी अब आधुनिक विचारधारा का प्रभाव पड़ने लगा उनमें पारंपिक धार्मिक जीवन और सांस्कृतिक जीवन से दूर होते चले गए। वे अपने मूल धार्मिक परंपराओं से दूर हटते जा रहे हैं।

(च) **युवा पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच दूरीः** युवा और बुजुर्गों के बीच दूरी एक सामाजिक मुद्दा जो पीढ़ीगत अंतरों के कारण उत्पन्न होता हैं। यह अंतर सोच, मूल्यों और जीवन शैली में भिन्नता के कारण होता है जिससे संवादहीनता और अलगाव की भावना बढ़ सकती हैं। इसके साथ हम देखते है कि युवा आज आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर वे अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों को पुराना मानते हैं। यही परिदृश्य हम नोक्टे जनजाति के युवाओं में भी देखते है जो समय के साथ, सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी तथा उनके सोच और जीवन शैली में भी बदलाव आ रहे हैं। यहाँ के युवा पीढ़ी आधुनिकता और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है जबकि बुजुर्ग पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों को अधिक

महत्व देती हैं। सोशल मीडिया और अन्य आधुनिक तकनीकों के कारण तो नोक्टे जनजाति के युवा पीढ़ी बुजुर्गों के साथ संवाद करने में भी कम रुचि रखती हैं। जिससे उनमें और दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। इसके कारण युवा एवं बुजुर्गों के बीच में प्रेम संबंध भी घटता जा रहा हैं।

(छ) **पहचान और आत्म संकटः** आधुनिकता के अंधानुकरण से नोक्टे जनजाति के समाज की जातीय पहचान और विशिष्टता खतरे में है, क्योंकि कई लोग अपनी पारंपरिक संस्कृति को हीन समझकर शहरी जीवन शैली को अपना रहे हैं। इससे इनकी सांस्कृतिक अस्मिता का संकट उत्पन्न हो रहा हैं। वे अपने गाँवों के जिम्मेदारियों, परिस्थितियों से मुक्त होकर अपना जीवन शहरों में यापन कर पहचान भी लुप्त होते जा रहे हैं।

(ज) **पारंपरिक भाषा का लुप्त होनाः** प्रत्येक भाषा अपनी संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान का भंडार होती हैं। भाषा के लुप्त होने से वह संस्कृति भी धीरे-धीरे लुप्त हो जाती हैं। इसके साथ यह मानवीय अनुभव को ही कम कर देती हैं। यही दशा आधुनिकीकरण के कारण नोक्टे जनजाति के लोगों में भी देखे जा सकते हैं। जहाँ वे अपनी मातृ भाषा को भूलाकर अन्य भाषाएँ जैसे – हिन्दी , अंग्रेजी, असमिया आदि भाषा बोलते हैं। जिसके कारण वे अपने रिश्तेदारों तथा अन्य गाँव के लोगों अपना जुड़ाव नहीं बना पाते। जिसके वजय से उनके सांस्कृतिक जुड़ाव में बाधा उत्पन्न हो जाता हैं।

समाधान और सुझावः

1. स्थानीय लोगों को विकास योजनाओं में भागीदारी बनाना।
2. पारंपरिक ज्ञान स्थानीय त्योहारों, नृत्यों तथा भाषा को स्कूल पाठ्यक्रम शामिल करना।
3. सामुदायिक संगठनों द्वारा युवा पीढ़ी को संस्कृति से जोढ़ने के कार्यक्रम किए जा सकते हैं।
4. सरकार और समाज मिलकर "सांस्कृति संग्रहालय" बनवाए जा सकते हैं।
5. युवा और बुजुर्गों को एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए प्रोत्साहित तथा अवसर प्रदान करना चाहिए वे एक दूसरे की सोच और अनुभवों को समझ सके तथा सम्मान कर सके।

निष्कर्षः-

नोक्टे जनजाति के लिए आधुनिकीकरण एक दो धारी तलवार की तरह हैं। एक ओर यह उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ता है तो दूसरी ओर उनकी संस्कृतिक विरासत को खतरे में डालता हैं। आवश्यक इस बात की है कि विकास के मार्ग को अपनाते हुए परंपारिक मूल्यों और पहचान को संरक्षित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. भारतीय संस्कृति एवं लोकगीत, परदेशी डॉ. अर्चना, प्रथम संस्करण-2011, वाईटल पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. लोक संस्कृति की रूपरेखा, उपाध्याय कृष्णदेव, संस्करण-2014, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. अरुणाचल की गालो जनजाति और उनकी सामाजिक व्यवस्था, सिंह डॉ. धर्मराज, प्रथम संस्करण-2001, अरुणाचल नागरी संस्थान प्रकाशन, ईटानगर।
4. आधुनिकता और आदिवासी, कुमारी लदली प्रकाशण वर्ष 2023, विकल्प प्रकाशण दिल्ली।
5. आधुनिक भारत का समाज, सिंह जे.पी.रावत बुक्स प्रकाशण।
6. गालो जनजाति की लोक संस्कृति, पाण्डेय डॉ. अरुण कुमार, बाला जी पब्लिकेशन, मेरठ।
7. नोक्टे जनजाति के बुजुर्ग एवं युवाओं से साक्षातकार एवं बातचीत- 10.3.2025 से 30.4.2025 तक की अवधि।